मजदूरी की मजबूरी

विपिन कुमार

एक तरफ जहाँ भूजल के गिरते स्तर के कारण किसान खेती छोड़ मजदूरी करने लगे हैं, वहीं जिले में होने वाली सालाना 1200 मि.मी. वर्षा जल को बड़े छोटे तालाबों एवं बाँधों के जरिये रोक कर किसानों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराने का कोई सार्थक प्रयास नहीं हो रहा है और स्वयं किसान भी इस दिशा में कोई पहल नहीं कर रहे हैं। यदि इस दिशा में कार्य किया जाए तो खेती किसानी की बदहाली दूर हो सकती है।

21वीं सदी में विकट चुनौती बनकर उभरे जल संकट के एक रूप भूजल स्तर में गिरावट ने भारत की कृषि और किसानों पर गंभीर चोट करना आरम्भ कर दिया है। देश के कुछ राज्यों की हरित क्रान्ति की सफलता को दोहराने के लिए अन्य राज्यों के किसानों द्वारा भूजल से सिंचाई की व्यवस्था उन्हें तीन दशकों में ही किसान से मजदूर बनाने लगी है। यह सब दिनों-दिन भूजल स्तर के नीचे जाने के फलस्वरूप नलकूपों की गहराई बढ़ने में हो रहे खर्च एवं सिंचाई के लिये पानी की कमी के चलते फसलों के सूखने से किसानों के समक्ष उत्पन्न भुखमरी की स्थिति के कारण हो रहा है।

ऊपर वर्णित परिस्थितियों की बारंबारता में 21वीं सदी के पहले दशक में आई तेजी के कारण झारखण्ड राज्य के किसानों में मजदूरी से पारिवारिक दायित्वों को पूरा करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। यहाँ हम गंगा के उपजाऊ मैदान में शुमार किये जाने वाले झारखण्ड राज्य के साहिबगंज जिले के 6500 हेक्टेयर क्षेत्रफल में सदियों से खेती बाड़ी से खुशहाल जीवन बिताते आ रहे उन हजारों किसानों की स्थितियों की कहानी बयाँ कर रहे हैं, जिनके द्वारा 1990 के दशक में सिंचाई के लिये अपनाई गई भूजल प्रणाली के बढ़ते खर्च से तंग आकर, वे स्वयं खेती छोड़ मजदूरी करने पर मजबूर हो गये।

दरअसल सदियों से राजमहल पहाड़ियों से निकलने वाले पहाड़ी झरनों, तालाबों, कुओं तथा मानसून की वर्षा के पानी से सिंचाई करते आ रहे स्थानीय किसानों को वर्ष 1990 से सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर पंजाब, हरियाणा की तरह ही खेती करने के लिये प्रोत्साहित किया जाने लगा। नलकूप, विद्युत और डीज़ल मोटर, उर्वरक, उन्नत बीज आदि सुविधाओं के लिये किये जाने वाले निवेश के लिये लगभग शून्य ब्याज दर पर सहकारी और ग्रामीण बैंकों ने किसानों को लोन दिया। एक तरह से मुफ्त में मिली इन सुविधाओं की बदौलत साहिबगंज जिले के किसानों ने पहली बार धरती के पानी से सिंचाई की शुरूआत की। सरकार द्वारा प्रायोजित इस कृषि के लिये 1992 तक किसानों को प्रोत्साहित किया गया, फिर सरकार ने किसानों को अपने पैरों पर खड़ा होने के गुर बताये।

इन बातों से गिरते भूजल स्तर और नलकूपों को गहरा करने से सिंचाई की बढ़ती लागत की जांच-पड़ताल किसानों के बीच जाकर करने पर यह बात सामने आयी कि 1990 में सरकारी सहायता से 6,500 हेक्टेयर भू-भाग में लगभग 4000 नलकूपों के लिए गड्ढे खुदवाए गए जिनको 30 फुट गहरा करने पर सिंचाई के लिए पानी मिल गया। वर्ष 1995 आते-आते 5 वर्ष पूर्व गड़वाये गए अधिकांश नलकूपों से निकल रहे कम पानी की मात्रा को देखते हुए किसानों ने नलकूपों को खेत के एक छोर से उखाड़ कर दूसरे छोर पर अपने खर्च से गड़वाना शुरू कर दिया। इस प्रक्रिया में किसानों को प्रत्येक नलकूप को उखड़वाने तथा दूसरे स्थान पर फिर से गड़वाने के लिए अपनी गाढ़ी कमाई में से लगभग 1000 रूपये प्रति नलकूप खर्च करने पड़े। वहीं बहुत जगहों पर नलकूपों को उखाड़ने-गाड़ने में हजारों रूपये खर्च करने के बावजूद भी सिंचाई के लायक पानी न मिलने से बहुत से किसानों की फसलें चौपट हो गईं। तब किसानों ने नलकूपों की गहराई 10 फुट और बढ़ाकर 40 फुट कर दी। वर्ष 2000 आते-आते किसानों के समक्ष 5 साल पुरानी समस्या अधिक भयावह रूप में प्रकट हुई। इसका भी समाधान किसानों ने 10 फुट गहराई और बढ़ाकर 2000 रूपये अतिरिक्त लगाकर किया। वर्ष 2005 आते-आते स्थिति यह हो गई कि 50 फुट गहरे नलकूप भी खेतों को पानी उपलब्ध कराने में अक्षम हो गये। इधर साल दर साल सिंचाई के लिए नलकूपों को उखाड़ने और अधिक गहरा गाड़ने से बढ़े खर्च एवं इस दौरान पानी की

भूजल से सिंचाई की व्यवस्था उन्हें तीन दशकों में ही किसान से मजदूर बनाने लगी है।

पानी से सिंचाई करते आ रहे स्थानीय किसानों को वर्ष 1990 से सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर पंजाब, हरियाणा की तरह ही खेती करने के लिये प्रोत्साहित किया जाने लगा।

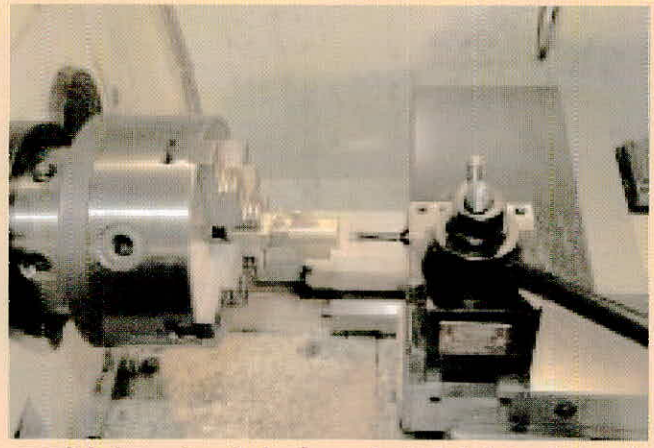

मुफ्त में मिली इन सुविधाओं की बदौलत साहिबगंज जिले के किसानों ने पहली बार धरती के पानी से सिंचाई की शुरूआत की।

यहाँ हम गंगा के उपजाऊ मैदान में शुमार किये जाने वाले झारखण्ड राज्य के साहिबगंज जिले के 6500 हेक्टेयर क्षेत्रफल में सदियों से खेती बाड़ी से खुशहाल जीवन बिताते आ रहे उन हजारों किसानों की स्थितियों की कहानी बयाँ कर रहे हैं, जिनके द्वारा 1990 के दशक में सिंचाई के लिये अपनाई गई भूजल प्रणाली के बढ़ते खर्च से तंग आकर, वे स्वयं खेती छोड़ मजदूरी करने पर मजबूर हो गये।

तालिका-1

वर्ष	नलकूपों की सख्या	नलकूपों की गहराई	नलकूप लगाने का खर्च	5 वर्ष उपरांत उखाड़ कर गाड़ने में लगा अतिरिक्त खर्च	समस्त नलकूपों को गड़वाने में आया खर्च	गहराई बढ़ाने में प्रत्येक 5 साल पर किसानों द्वारा किया गया खर्च
1990	4000	30फीट	1000रू. सरकारी अनुदान	शून्य	4000000रू. सरकारी अनुदान	शून्य
1995	3800	40फीट	1000	1000	3800000	3800000
2000	3500	50फीट	3000	2000	10500000	7000000
2005	3100	60फीट	4500	1500	13950000	4650000
2010	2800	70फीट	7000	2500	19600000	7000000
कुल योग						22450000/-

नोट : लघु सिंचाई विभाग एवं किसानों से ज्ञात जानकारी के आधार पर तैयार की गई

भूजल स्तर के नीचे जाने के फलस्वरूप नलकूपों की गहराई बढ़ने में हो रहे खर्च एवं सिंचाई के लिये पानी की कमी के चलते फसलों के सूखने से किसानों के समक्ष उत्पन्न भुखमरी की स्थिति के कारण हो रहा है।

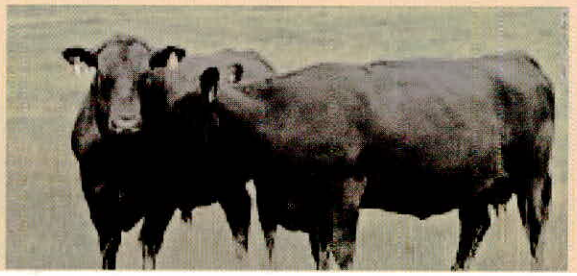

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

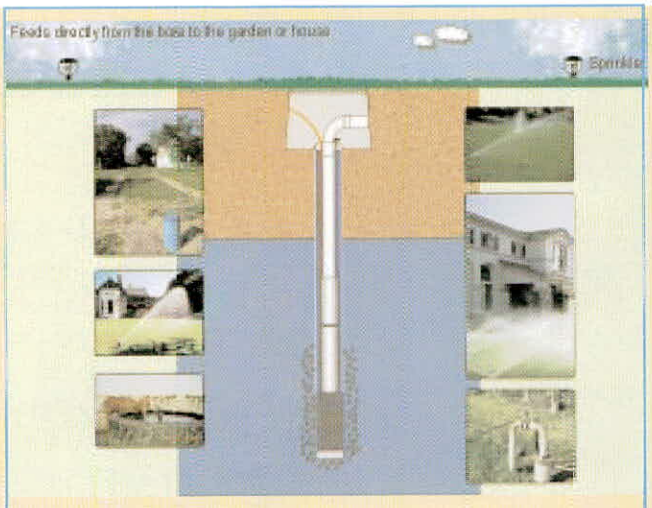

एक तरफ जहाँ भूजल के गिरते स्तर के कारण किसान खेती छोड़ मजदूरी करने लगे हैं, वहीं जिले में होने वाली सालाना 1200 मि.मी. वर्षा जल को बड़े छोटे तालाबों एवं बाँधों के जरिये रोक कर किसानों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराने का कोई सार्थक प्रयास नहीं हो रहा है और स्वयं किसान भी इस दिशा में कोई पहल नहीं कर रहे हैं। यदि इस दिशा में कार्य किया जाए तो खेती किसानी की बदहाली दूर हो सकती है।

कमी से नष्ट हुई फसलों के परिणामस्वरूप सैकड़ों किसान भुखमरी की कगार पर पहुँच गए। हाजीपुर, कोदरजन्ना, महादेवगंज, सकरीगली, रामपुर, राजमहल, उधवा क्षेत्र के सैकड़ों किसानों ने खेती छोड़ मजदूरी करना आरम्भ कर दिया। वहीं नलकूपों की गहराई बढ़ाने में सक्षम किसानों ने वर्ष 2000 की तुलना में 1500 अतिरिक्त यानी 4,500 रूपये खर्च कर नलकूपों की गहराई 60 फुट कर दी। वर्ष 2010 में नलकूपों को 70 फुट गहरा करने में किसानों को 2005 की तुलना में 2500 रूपये अधिक खर्च करने पड़े।

साहिबगंज जिले में पिछले 20 वर्ष में सिंचाई के लिए भूजल पर बढ़ी निर्भरता के चलते नीचे जा रहे जल स्तर से पानी प्राप्त करने में हुए किसानों के संभावित खर्च को तालिका-1 में दर्शाया गया है।

आँकड़ों से स्पष्ट है कि 1995 से 2010 के बीच अपनी कमाई के दो करोड़ चौबीस लाख, पचास हजार रूपये नलकूपों की गहराई बढ़ाने में खर्च करने के बावजूद सिंचाई के लायक मनमाफिक पानी न मिलने से 1000 से ज्यादा नलकूप बेकार हो गए जिसके चलते सैकड़ों किसान खेती छोड़ मजदूरी करने चले गए।

एक तरफ जहाँ भूजल के गिरते स्तर के कारण किसान खेती छोड़ मजदूरी करने लगे हैं, वहीं जिले में होने वाली सालाना 1200 मि.मी. वर्षा जल को बड़े छोटे तालाबों एवं बाँधों के जरिये रोक कर किसानों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराने का कोई सार्थक प्रयास नहीं हो रहा है और स्वयं किसान भी इस दिशा में कोई पहल नहीं कर रहे हैं। यदि इस दिशा में कार्य किया जाए तो खेती किसानी की बदहाली दूर हो सकती है।

संपर्क करें :
श्री विपिन कुमार, शोध छात्र,
स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय
भागलपुर बिहार [मो. : 09006570551]

पानी : अनोखा यात्री

दिनेश चन्द शर्मा

लम्बी-लम्बी यात्रा करता,
रिसता बहता है रहता।
पानी एक अनोखा यात्री,
हरदम चलता है रहता।।
सागर से यह भाप रूप में,
बादल बनकर उड़ जाता।
और वायु के साथ-साथ ही,
दूर देश तक है जाता।
बर्फ, ओस, कहीं वर्षा बनकर,
जगह-जगह जमता गिरता।
और कहीं कुहरा सा बनकर,
इधर-उधर भागा फिरता।
कुछ उड़ता बन भाप धरा से,
बादल बनता है रहता।
पानी एक अनोखा यात्री,
हरदम चलता है रहता।।
कभी बिखरता आटा जैसा,
घास-फूस और आँगन में।
रूई के फाहे सा उड़ता,
फिरता हैवन-उपवन में।
घाटी-चोटी पर पर्वत की,
अथवा ठण्डे जल-थल में।
बन जाते हिमखण्ड बहुत से,
तैरें ये सागर जल में,
और पिघलता गर्मी पाकर,
धाराओं में है बहता।
पानी एक अनोखा यात्री,
हरदम चलता है रहता।।
छोटी-छोटी धाराओं से,
बनती नदिया छोटी सी।
छोटी-छोटी सी नदियों से,
बन जाती बड़ी नदी।
झरना बन घाटी से होकर,
मैदानों में फिर बहती।
सिंचित करके तटक्षेत्रों को,
सागर में जाकर मिलती।
जीवधारियों, हरियाली को,
जीवन देता है रहता।
पानी एक अनोखा यात्री,
हरदम चलता है रहता।।
झीलों, तालों और नदियों से,
धरती में रिसता जाता।
और वहां भी तरह-तरह से,
अपने करतब दिखलाता।
भू के भीतर रिसता बहता,
धारायें भी बन जाता।
आता जब अवरोध सामने,
फव्वारे सा फट जाता।।
विविध तरह से काम सभी के,
ऊपर आता है रहता।
पानी एक अनोखा यात्री,
हरदम चलता है रहता।।
आस-पास पेड़-पौधों के,
मिट्टी में मिलजुल रहता।
जल से लेकर पत्तों तक,
सारे पौधों में बहता।
धूप, खनिज, आक्सीजन से मिल,
बनता पौधों का भोजन।
इससे ही हरियाली रहती,
और इसी से ही जीवन।
पत्तों के रन्ध्रों से होकर,
बाहर उड़ता है रहता
पानी एक अनोखा यात्री,
हरदम चलता है रहता।।
सारे जग में होता क्रम से,
पानी का यूं बँटवारा।
विविध काम लोगों के आता,
मीठा और कहीं खारा।
पानी है भरपूर जहां पर,
ऐसे हैं अनगिनत स्थान।
जहां नहीं पानी जा पाता,
वहां हैं सूखे रेगिस्तान।
बूँद-बूँद पानी कहीं दुर्लभ,
और कहीं बहता रहता।
पानी एक अनोखा यात्री,
हरदम चलता है रहता।।

साभार : विपनेट न्यूज़ (विज्ञान प्रसार)